'टू-बिग-टु-फेल'

स्रोत – द हिन्दू

चर्चा में क्यों ?

- अमेरिका में सिलिकॉन वैली बैंक (SVB) और सिग्नेचर बैंक की विफलता हर जगह जमाकर्त्ताओं के धन की सुरक्षा पर सवाल खड़ा करती है। SVB की विफलता ने शेयर बाजारों में हलचल पैदा कर दी है।
- भारतीय प्रणाली में ऐसी विफलताओं की संभावना नहीं है। इसके अलावा, RBI के द्वारा SBI, ICICI बैंक और HDFC बैंक को D-SIB के रूप में वर्गीकृत किया है, इन बैंकों को अपने संचालन की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त पूंजी और प्रावधानों को निर्धारित करना होगा।

पृष्ठभूमि

- सिलिकॉन वैली बैंक, प्रौद्योगिकी की दुनिया में सबसे बड़े नामों में से एक ऋणदाता था जो 2008 के वित्तीय संकट के बाद से असफल होने वाला भी सबसे बड़ा बैंक है।
- 2008 में निवेश बैंक लेहमैन ब्रदर्स के पतन से उत्पन्न वैश्विक वित्तीय संकट देखने को मिला। परंतु हालिया वित्तीय क्षेत्र में वैश्विक अंतर्संबंधों के बावजूद डेढ़ दशक से भारतीय बैंक अमेरिका में सिलिकॉन वैली बैंक (SVB) और सिग्नेचर बैंक की विफलता से अप्रभावित रहे।

भारतीय बैंकों के लचीलेपन में विश्वास का आधार क्या है?

- भारत में SVB जैसी विफलता की संभावना नहीं होने का एक कारण यह है कि घरेलू बैंकों की एक अलग बैलेंस शीट संरचना है।
- भारत में बैंक जमा का एक बड़ा हिस्सा , घरेलू बचत का है, जबकि अमेरिका में बैंक जमा का एक बड़ा हिस्सा कॉरपोरेट्स का है।

- भारतीय जमा का एक बड़ा हिस्सा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पास है, शेष अधिकांश भाग HDFC बैंक, ICICI बैंक और AXIS बैंक जैसे बहुत मजबूत निजी क्षेत्र के ऋणदाताओं के पास है।
- सरकार, बैंकिंग प्रणाली में आवश्यकता के अनुसार हस्तक्षेप करती रही है। उदाहरण के तौर पर, YES बैंक का बचाव, जहाँ बैंक को विफल होने से बचाने के लिए बहुत अधिक तरलता सहायता प्रदान की गई थी।

D-SIB क्या है?

- RBI ने SBI, ICICI बैंक और HDFC बैंक को घरेलू- व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (D-SIB) के रूप में वर्गीकृत किया है।
- केंद्रीय बैंक ने 2014 में D-SIB फ्रेमवर्क जारी किया था, जिसके अनुसार 2015 में नामित बैंकों के नाम का खुलासा किया और उन्हें उनके Systemic Importance Scores (SISs) के आधार पर उपयुक्त बकेट में रखना जरूरी बना दिया था।
- D-SIB के लिए अतिरिक्त कॉमन इक्विटी टियर- 1 (CET-1) आवश्यकता के अनुसार 1 अप्रैल, 2016 से चरणबद्ध तरीके से लागू की गई थी और 1 अप्रैल, 2019 से पूरी तरह से प्रभावी हो पायी।

कॉमन इक्विटी टियर-1 (CET1) क्या है?

- **कॉमन इक्विटी टियर 1 (CET1),** टियर 1 पूंजी का एक घटक है जो मुख्य रूप से किसी बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान द्वारा धारित सामान्य स्टॉक है।
- CET1, एक पूंजीगत उपाय है जिसे 2014 में अर्थव्यवस्था को वित्तीय संकट से बचाने के लिए एहतियाती तरीके के रूप में पेश किया गया था, मुख्य रूप से यूरोपीय बैंकिंग प्रणाली के संदर्भ में। सभी यूरोज़ोन बैंकों से उम्मीद की जाती है कि वे अपनी जोखिम-भारित संपत्ति के लिए वित्तीय नियामकों द्वारा उल्लिखित न्यूनतम CET1 अनुपात आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।

G – SIB क्या है ?

- केंद्रीय बैंक के अनुसार, अगर भारत में विदेशी बैंक शाखा, एक G-SIB (Global Systemically Important Bank) है, तो उसे अपने RWA के अनुपात के अनुसार, देश में अतिरिक्त CET1 कैपिटल सरचार्ज को बनाए रखना होगा।

- SIB वित्तीय संकट के वक्त बैंकों की मदद सरकार के जरिए करते हैं , ये बैंक फंडिंग मार्केट में कुछ विशेष सुविधाओं का भी लाभ लेते हैं।
- इसके अलावा, SIB को पर्यवेक्षण के उच्च स्तर के अधीन किया जाता है ताकि किसी भी विफलता की स्थिति में वित्तीय सेवाओं में व्यवधान को रोका जा सके।
- G-20 राष्ट्रों की एक पहल ने बेसल समिति (BCBS), स्विट्जरलैंड स्थित वित्तीय स्थिरता बोर्ड (FSB), स्विस राष्ट्रीय प्राधिकरणों के परामर्श से वैश्विक व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (G-SIBs) की एक सूची की पहचान की है।
- जेपी मॉर्गन, सिटी बैंक,HSBC, बैंक ऑफ अमेरिका, बैंक ऑफ चाइना, बार्कलेज, बीएनपी परिबास, ड्यूश बैंक और गोल्डमैन सैक्स सहित वर्तमान में 30 बैंक , G-SIBs हैं।

RBI द्वारा D-SIB का चयन कैसे किया जाता है?

- RBI, बैंकों के प्रणालीगत महत्व का आकलन करने के लिए दो-चरणीय प्रक्रिया का पालन करता है।
  1. बैंकों का एक नमूना उनके प्रणालीगत महत्व पर निर्भर करता है। इसके अंतर्गत सभी बैंकों पर विचार नहीं किया जाता, क्योंकि छोटे बैंक की प्रणालीगत प्रक्रिया नियमित आधार पर भारी डेटा आवश्यकताओं का बोझ हेतु तैयार नहीं होती है।
  2. GDP के प्रतिशत के रूप में बैंकों को उनके आकार के विश्लेषण (बासेल-III लीवरेज अनुपात जोखिम उपाय के आधार पर) के आधार पर प्रणालीगत महत्व की गणना के लिए चुना जाता है। इसमें GDP के 2% से अधिक आकार वाले बैंकों का चयन किया किया जाना निर्धारित किया गया है।
- बैंकों की चयन प्रक्रिया के बाद, उनके प्रणालीगत महत्व की गणना का विस्तृत अध्ययन शुरू किया जाता है। संकेतकों की एक श्रृंखला के आधार पर, प्रत्येक बैंक के लिए प्रणालीगत महत्व के समग्र स्कोर की गणना की जाती है। जिन बैंकों का एक निश्चित सीमा से अधिक प्रणालीगत महत्व होता है, उन्हें D-SIB के रूप में नामित किया गया है।

SIB बनाना क्यों महत्वपूर्ण समझा गया?

- 2008 के संकट के दौरान, कुछ बड़े और अत्यधिक परस्पर जुड़े वित्तीय संस्थानों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं ने वैश्विक वित्तीय प्रणाली के व्यवस्थित कामकाज में बाधा उत्पन्न की, जिसने वास्तविक अर्थव्यवस्था को

नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इसी क्रम में कई न्यायालयों ने वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप को आवश्यक माना।

- RBI के अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र के हस्तक्षेप की लागत और नैतिक खतरे में परिणामी वृद्धि, भविष्य की नियामक नीतियों की संभावना तथा SIB की विफलता के प्रभाव को कम करने का लक्ष्य होना चाहिए।
- बेसल-III मानदंड एक पूंजी पर्याप्तता अनुपात (CAR) निर्धारित करते हैं - जोखिम के लिए बैंक की पूंजी का अनुपात – 8%, , सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के लिए 9% और 12% CAR अनिवार्य है।

समाधान

- किसी बड़े बैंक के कहीं भी विफल होने से दुनिया भर में संक्रामक प्रभाव पड़ सकता है। किसी बैंक की हानि या विफलता से घरेलू वास्तविक अर्थव्यवस्था को अधिक नुकसान होने की संभावना होगी।
- किसी बड़े बैंक की हानि या विफलता से समग्र रूप से बैंकिंग प्रणाली में विश्वास को नुकसान पहुंचने की संभावना है। प्रणालीगत महत्व के एक उपाय के रूप में, आकार किसी भी अन्य संकेतक की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है।
- एक बैंक की हानि या विफलता संभावित रूप से अन्य बैंकों की हानि या विफलता की संभावना को बढ़ा सकती है, यदि उनके बीच उच्च स्तर की परस्पर संबद्धता (संविदात्मक दायित्व) हो।
- यह श्रृंखला प्रभाव बैलेंस शीट के दोनों तरफ संचालित होता है - फंडिंग पक्ष के साथ-साथ परिसंपत्ति पक्ष पर भी अंतर्संबंध हो सकते हैं। लिंकेज की संख्या और व्यक्तिगत एक्सपोजर का आकार जितना बड़ा होगा, प्रणालीगत जोखिम के बढ़ने की संभावना उतनी ही अधिक होगी, जिससे वित्तीय क्षेत्र में तनाव हो सकता है।